

سُورَةُ الْأَحْقَافِ ۞ قَاف

Surah 46 — Al-Ahqaf (The Dunes) · Meccan · 35 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

हा मीम

2

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ

ये किताब ग़ालिब (व) हकीम खुदा की तरफ से नाज़िल हुई है

3

مَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ ۞ مُّسَمَّٰى ۞ وَالَّذِينَ
كَفَرُوا ۞ عَمَّا أَنْذَرُوا ۞ مُّعْرِضُونَ

हमने तो सारे आसमान व ज़मीन और जो कुछ इन दोनों के दरमियान है हिकमत ही से एक खास वक्त तक के लिए ही पैदा किया है और कुफ़रार जिन चीज़ों से डराए जाते हैं उन से मुँह फेर लेते हैं

4

قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا ۞ مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ ۞
فِي السَّمَوَاتِ ۞ أَتُنُونِي بِكِتَابٍ ۞ مِنْ قَبْلِ هَذَا أَوْ أَثَرَةٍ ۞ مِّنْ عِلْمٍ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ

(ऐ रसूल) तुम पूछो कि खुदा को छोड़ कर जिनकी तुम इबादत करते हो क्या तुमने उनको देखा है मुझे भी तो दिखाओ कि उन लोगों ने ज़मीन में क्या चीज़ें पैदा की हैं या आसमानों (के बनाने) में उनकी शिरकत है तो अगर तुम सच्चे हो तो उससे पहले की कोई किताब (या अगलों के) इल्म का बक़िया हो तो मेरे सामने पेश करो

5

وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ يَدْعُوا ۞ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَنْ لَا يَسْتَجِيبُ لَهُ ۞ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ وَهُمْ
عَنْ دُعَائِهِمْ غَفُلُونَ

और उस शरूश से बढ़ कर कौन गुमराह हो सकता है जो खुदा के सिवा ऐसे शरूश को पुकारे जो उसे क़यामत तक जवाब ही न दे और उनको उनके पुकारने की ख़बरें तक न हों

6

وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَاءً ۖ وَكَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ كُفَرِينَ

और जब लोग (क़यामत) में जमा किये जाएंगे तो वह (माबूद) उनके दुश्मन हो जाएंगे और उनकी परसतिश से इन्कार करेंगे

7

وَإِذَا تُلِيَّ عَلَيْهِمُ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ ۖ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ هَذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ

और जब हमारी खुली खुली आयतें उनके सामने पढ़ी जाती हैं तो जो लोग काफिर हैं हक़ के बारे में जब उनके पास आ चुका तो कहते हैं ये तो सरीही जादू है

8

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۚ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ ۖ فَلَا تَمْلِكُونَ لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ ۚ كَفَىٰ بِهِ ۖ شَهِيدًا ۖ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ

क्या ये कहते हैं कि इसने इसको खुद गढ़ लिया है तो (ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगर मैं इसको (अपने जी से) गढ़ लेता तो तुम खुदा के सामने मेरे कुछ भी काम न आओगे जो जो बातें तुम लोग उसके बारे में करते रहते हो वह खूब जानता है मेरे और तुम्हारे दरमियान वही गवाही को काफ़ी है और वही बड़ा बख़्शने वाला है मेहरबान है

9

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا ۖ إِنِّي الْمُرْسَلُ وَمَا أَدْرِي مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ ۚ إِنِ اتَّبَعُ إِلَّا مَا يُوْحَىٰ إِلَيَّ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं कोई नया रसूल तो आया नहीं हूँ और मैं कुछ नहीं जानता कि आइन्दा मेरे साथ क्या किया जाएगा और न (ये कि) तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा मैं तो बस उसी का पाबन्द हूँ जो मेरे पास वही आयी है और मैं तो बस एलानिया डराने वाला हूँ

10

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَكَفَرْتُمْ بِهِ ۖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ ۖ مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِ ۖ فَأَمَنَ وَأَسْتَكْبَرْتُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि भला देखो तो कि अगर ये (कुरान) खुदा की तरफ से हो और तुम उससे इन्कार कर बैठे हालाँकि (बनी इसराईल में से) एक गवाह उसके मिसल की गवाही भी दे चुका और ईमान भी ले आया और तुमने सरकशी की (तो तुम्हारे ज़ालिम होने में क्या शक़ है) बेशक़ खुदा ज़ालिम लोगों को मन्ज़िल मक़सूद तक नहीं पहुँचाता

11

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَوْ كَانَ خَيْرًا ۖ مَا سَبَقُونَا إِلَيْهِ ۚ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ ۚ فَسَيَقُولُونَ هَذَا إِنْكُۦ قَدِيمٌ ۚ

और काफिर लोग मोमिनों के बारे में कहते हैं कि अगर ये (दीन) बेहतर होता तो ये लोग उसकी तरफ हमसे पहले न दौड़ पड़ते और जब कुरान के ज़रिए से उनकी हिदायत न हुई तो अब भी कहेंगे ये तो एक क़दीमी झूठ है

12

وَمِنْ قَبْلِهِ ۚ كَتَبُ مُوسَىٰ إِمَامًا ۖ وَرَحْمَةً ۚ وَهَذَا كِتَابٌ مُّصَدِّقٌ ۚ لِّسَانًا عَرَبِيًّا ۖ لِّيُنذِرَ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ وَيُبَشِّرَ لِّلْمُحْسِنِينَ

और इसके क़ब्ल मूसा की किताब पेशवा और (सरासर) रहमत थी और ये (कुरान) वह किताब है जो अरबी ज़बान में (उसकी) तसदीक करती है ताकि (इसके ज़रिए से) ज़ालिमों को डराए और नेकी कारों के लिए (अज़सरतापा) खुशख़बरी है

13

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَمُوا ۚ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा परवरदिगार खुदा है फिर वह इस पर क़ायम रहे तो (क़यामत में) उनको न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे

14

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ جَزَاءً ۚ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

यही तो अहले जन्नत हैं कि हमेशा उसमें रहेंगे (ये) उसका सिला है जो ये लोग (दुनिया में) किया करते थे

أَوَلَيْكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا خُسْرِينَ

ये वही लोग हैं कि जिन्नात और आदमियों की (दूसरी) उम्मतें जो उनसे पहले गुज़र चुकी हैं उन ही के शुमूल में उन पर भी अज़ाब का वायदा मुस्तहक़ हो चुका है ये लोग बेशक घाटा उठाने वाले थे

وَلِكُلٍّ ۖ دَرَجَتٌ ۚ مِّمَّا عَمِلُوا ۚ ۚ وَلِيُؤَفِّفَهُمُ أَعْمَلَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ

और लोगों ने जैसे काम किये होंगे उसी के मुताबिक सबके दर्जे होंगे और ये इसलिए कि खुदा उनके आमाल का उनको पूरा पूरा बदला दे और उन पर कुछ भी ज़ुल्म न किया जाए

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ عَلَى النَّارِ أُنْزِلَتْ طَبَقَاتُهَا فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُونَ

और जिस दिन कुफ़ार जहन्नुम के सामने लाएँ जाएँगे (तो उनसे कहा जाएगा कि) तुमने अपनी दुनिया की ज़िन्दगी में अपने मज़े उड़ा चुके और उसमें खूब चैन कर चुके तो आज तुम पर ज़िल्लत का अज़ाब किया जाएगा इसलिए कि तुम अपनी ज़मीन में अकड़ा करते थे और इसलिए कि तुम बदकारियां करते थे

ۚ وَأَذْكُرُ أَخَا عَادٍ إِذْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ ۚ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتْ النُّجُودُ مِن ۚ بَيْنَ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ ۚ أَلَّا تَعْبُدُوا ۚ إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۚ

और (ऐ रसूल) तुम आद को भाई (हूद) को याद करो जब उन्होंने अपनी क़ौम को (सरज़मीन) अहक़ाफ़ में डराया और उनके पहले और उनके बाद भी बहुत से डराने वाले पैग़म्बर गुज़र चुके थे (और हूद ने अपनी क़ौम से कहा) कि खुदा के सिवा किसी की इबादत न करो क्योंकि तुम्हारे बारे में एक बड़े सख्त दिन के अज़ाब से डरता हूँ

قَالُوا ۚ أَجِئْنَا لَتَأْفِكِنَا عَنْ ءَالِهَتِنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ

वह बोले क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हमको हमारे माबूदों से फेर दो तो अगर तुम सच्चे हो तो जिस अज़ाब की तुम हमें धमकी देते हो ले आओ

قَالَ إِنَّمَا أَلِمْ عِنْدَ اللَّهِ وَأُبَلِّغُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ ۖ وَلَكِنِّي أَرَاكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ

हूद ने कहा (इसका) इल्म तो बस खुदा के पास है और (मैं जो एहकाम देकर भेजा गया हूँ) वह तुम्हें पहुँचाए देता हूँ मगर मैं तुमको देखता हूँ कि तुम जाहिल लोग हो

فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا ۖ مُسْتَقْبِلَ أَوْدِيَّتِهِمْ قَالُوا ۖ هَذَا عَارِضٌ ۖ مُّمْطَرُنَا ۖ بَلْ هُوَ مَا
أُسْتَعْجَلْتُمْ بِهِ ۖ ۖ رِيحٌ ۖ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ

तो जब उन लोगों ने इस (अज़ाब) को देखा कि वबाल की तरह उनके मैदानों की तरफ उम्ड़ा आ रहा है तो कहने लगे ये तो बादल है जो हम पर बरस कर रहेगा (नहीं) बल्कि ये वह (अज़ाब) जिसकी तुम जल्दी मचा रहे थे (ये) वह आँधी है जिसमें दर्दनाक (अज़ाब) है

تَدْمِرُ كُلَّ شَيْءٍ ۖ بِأَمْرِ رَبِّهَا فَأَصْبَحُوا ۖ لَا يُرَىٰ إِلَّا مَسْكِنُهُمْ ۖ كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ
الْمُجْرِمِينَ

जो अपने परवरदिगार के हुक्म से हर चीज़ को तबाह व बरबाद कर देगी तो वह ऐसे (तबाह) हुए कि उनके घरों के सिवा कुछ नज़र ही नहीं आता था हम गुनाहगारों की यूँ ही सज़ा किया करते हैं

وَلَقَدْ مَكَّنَّهُمْ فِيمَا إِن مَّكَّنَّكُمْ فِيهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا ۖ وَأَبْصَرًا ۖ وَأَفْئِدَةً ۖ فَمَا أَغْنَىٰ
عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَا أَبْصَرُهُمْ وَلَا أَفْئِدَتُهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۖ إِذْ كَانُوا ۖ يَجْحَدُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ
وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا ۖ بِهِ ۖ يَسْتَهْزِءُونَ

और हमने उनको ऐसे कामों में मक़दूर दिये थे जिनमें तुम्हें (कुछ भी) मक़दूर नहीं दिया और उन्हें कान और आँख और दिल (सब कुछ दिए थे) तो चूँकि वह लोग खुदा की आयतों से इन्कार करने लगे तो न उनके कान ही कुछ काम आए और न उनकी आँखें और न उनके दिल और जिस (अज़ाब) की ये लोग हँसी उड़ाया करते थे उसने उनको हर तरफ से घेर लिया

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرَىٰ وَصَرَفْنَا آلَآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ

और (ऐ अहले मक्का) हमने तुम्हारे इर्द गिर्द की बस्तियों को हलाक कर मारा और (अपनी कुदरत की) बहुत सी निशानियाँ तरह तरह से दिखा दी ताकि ये लोग बाज़ आएँ (मगर कौन सुनता है)

فَلَوْلَا نَصْرَهُمُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا ۚ مِنْ دُونِ اللَّهِ قُرْبَانًا ءَالِهَةً ۚ ۚ بَلْ ضَلُّوا ۚ عَنْهُمْ ۚ
وَذَلِكَ إِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوا ۚ يَفْتَرُونَ

तो खुदा के सिवा जिन को उन लोगों ने तक्ररुब (खुदा) के लिए माबूद बना रखा था उन्होंने (अज़ाब के वक्त) उनकी क्यों न मदद की बल्कि वह तो उनसे गायब हो गये और उनके झूठ और उनकी (इफ़तेरा) परदाज़ियों की ये हक़ीक़त थी

وَإِذْ صَرَفْنَا إِلَيْكَ نَفَرًا ۚ مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُونَ الْقُرْآنَ فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوا ۚ
أَنصِتُوا ۚ ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا ۚ إِلَىٰ قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِينَ

और जब हमने जिनों में से कई शरूखों को तुम्हारी तरफ़ मुतावज्जे किया कि वह दिल लगाकर कुरान सुनें तो जब उनके पास हाज़िर हुए तो एक दुसरे से कहने लगे खामोश बैठे (सुनते) रहो फिर जब (पढ़ना) तमाम हुआ तो अपनी क़ौम की तरफ़ वापस गए

قَالُوا ۚ يُقَوْمَنَا إِنَّا سَمِعْنَا كِتَابًا أُنزِلَ مِن ۚ بَعْدِ مُوسَىٰ مُصَدِّقًا ۚ لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِي
إِلَى الْحَقِّ وَإِلَىٰ طَرِيقٍ ۚ مُّسْتَقِيمٍ ۚ

कि (उनको अज़ाब से) डराएं तो उन से कहना शुरू किया कि ऐ भाइयों हम एक किताब सुन आए हैं जो मूसा के बाद नाज़िल हुई है (और) जो किताबें, पहले (नाज़िल हुयीं) हैं उनकी तसदीक़ करती हैं सच्चे (दीन) और सीधी राह की हिदायत करती हैं

يَقَوْمَنَا أَجِيبُوا ۚ دَاعِيَ اللَّهِ وَءَامِنُوا ۚ بِهِ ۚ يَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِّنْ
عَذَابٍ أَلِيمٍ ۚ

ऐ हमारी क़ौम खुदा की तरफ़ बुलाने वाले की बात मानों और खुदा पर ईमान लाओ वह तुम्हारे गुनाह बरूख़ देगा और (क़यामत) में तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से पनाह में रखेगा

وَمَنْ لَا يُجِبْ دَاعِيَ اللَّهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ ۚ فِي الْأَرْضِ وَلَيْسَ لَهُ ۚ مِنْ دُونِهِ ۚ
أُولِيَاءُ ۚ أَوْ لِّلْكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ

और जिसने खुदा की तरफ़ बुलाने वाले की बात न मानी तो (याद रहे कि) वह (खुदा को रूए) ज़मीन में आजिज़ नहीं कर सकता और न उस के सिवा कोई सरपरस्त होगा यही लोग गुमराही में हैं

أَوَلَمْ يَرَوْا ۚ أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ أَنْ
يُحْيِيَ ۚ الْمَوْتَىٰ ۚ بَلَىٰ إِنَّهُ ۚ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ ۚ قَدِيرٌ ۚ

क्या इन लोगों ने ये ग़ौर नहीं किया कि जिस खुदा ने सारे आसमान और ज़मीन को पैदा किया और उनके पैदा करने से ज़रा भी थका नहीं वह इस बात पर कादिर है कि मुर्दों को ज़िन्दा करेगा हाँ (ज़रूर) वह हर चीज़ पर कादिर है

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ عَلَى النَّارِ أَلَيْسَ هَذَا بِالْحَقِّ ۚ قَالُوا ۚ بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ
قَالَ فَذُوقُوا ۚ الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ

जिस दिन कुफ़ार (जहन्नूम की) आग के सामने पेश किए जाएँगे (तो उन से पूछा जाएगा) क्या अब भी ये बरहक नहीं है वह लोग कहेंगे अपने परवरदिगार की कसम हाँ (हक़ है) खुदा फ़रमाएगा तो लो अब अपने इन्कार व कुफ़र के बदले अज़ाब के मज़े चखो

فَأَصْبِرْ ۖ كَمَا صَبَرَ أُو۟لُوا ۚ الْعِزْمِ مِنَ الرُّسُلِ ۖ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَهُمْ ۚ كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرُونَ
مَا يُوعَدُونَ لَمْ يَلْبَثُوا ۚ إِلَّا سَاعَةً ۚ مِّنْ نَّهَارٍ ۚ ۚ بَلَّغٌ ۚ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ إِلَّا الْقَوْمُ
الْفَاسِقُونَ

तो (ऐ रसूल) पैग़म्बरों में से जिस तरह अव्वलुल अज़्म (आली हिम्मत), सब्र करते रहे तुम भी सब्र करो और उनके लिए (अज़ाब) की ताज़ील की ख्वाहिश न करो जिस दिन यह लोग उस कयामत को देखेंगे जिसको उनसे वायदा किया जाता है तो (उनको मालूम होगा कि) गोया ये लोग (दुनिया में) बहुत रहे होंगे तो सारे दिन में से एक घड़ी भर तो बस वही लोग हलाक होंगे जो बदकार थे